वो घोंसला....

नवीन जोशी

वो तिनके जोड़ने का हौसला दे दो ना,
वो मुझे लटकता हरा घोंसला दे दो ना।
वो पीली टोपी वाली रहती पेड़ के दामन में,
उससे रोज दिवाली रहती थी मेरे आंगन में।
वो हर सुबह मुझे जगाने की जिद करती थी,
रोज श्रम कर अपना कर्तव्य सिद्ध करती थी।
क्यों रूठी मुझसे,नाराजगी का मसला दे दो ना।

वो मुझे लटकता हरा घोंसला दे दो ना।।
हर तरफ नफरत ही भरी है जिसमें देखूं मैं,
बता तेरी तस्वीर अब कहाँ-किसमें देखूं मैं?
तुमने वादा किया था सावन बरसे पहले,
तुम मिलोगी कहीं मेरी आंखे तरसे पहले।
तुझपर मुकदमा है,ए-खुदा फैसला दे दो ना।

वो मुझे लटकता हरा घोंसला दे दो ना।।
वो पंख फैलाकर मिट्टी से स्नान करती थी तू,
देखने वालों की झुर्रियां जवान करती थी तू।
चुग्गा लाने तक बच्चों का ध्यान रखता था मैं,
कलाकारी तेरी थी पर अभिमान रखता था मैं
यादें बुहारी मैंने उन्हें बहाने को तसला दे दो ना।

वो मुझे लटकता हरा घोंसला दे दो ना,
वो तिनके जोड़ने का हौसला दे दो ना।।

शोध छात्र, पद्मश्री नारायणदास रामानन्ददर्शन अध्ययन एवं शोध संस्थान, जयपुर